This question paper contains 4 printed pages]

S. No. of Question Paper : **3554**

Unique Paper Code : **12051102**

Name of the Paper : **हिंदी कविता (आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य)**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (CBCS)**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अमीर खुसरो का काव्य लौकिक एवं अलौकिक दोनों पक्षों को अभिव्यक्त करता है। स्पष्ट कीजिये।

अथवा

विद्यापति के काव्य-सौंदर्य की समीक्षा कीजिये। 12

2. कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये।

अथवा

'मधुमालती' की काव्य भाषा पर विचार कीजिये। 12

3. सूरदास की विरह भावना पर प्रकाश डालिये।

अथवा

मीरा काव्य में स्त्री वेदना की विवेचना कीजिये। 12

4. तुलसी काव्य में राम के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

अथवा

रामचरितमानस के आधार पर तुलसी की समन्वयवादी दृष्टि पर विचार कीजिये। 12

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : 8+7

(क) छाप-तिलक तज दीन्ही रे, तोसे नैना मिला के।

प्रेम बटी का मदवा पिलाके

मतवारी कर दीन्ही रे, मोसे नैना मिला के।

'खुसरो' निजाम पै बलि-बलि जइए,

मोहे सुहागन कीन्ही रे, मोसे नैना मिला के।

अथवा

कबीर औगुँण ना गहैं, गुँण ही कौ लें बीनि।

घट घट महु के मधुप ज्यूँ, पर आत्म ले चीन्हि।।

बसुधा बन बहुँ भाँति है, फूल्यो फल्यौ अगाध।

मिष्ट सुबास कबीर गहि, विषम कहै किहि साथ।।

(ख) पग बाँध घूँघरयाँ णाच्यारी।।

लोग कह्या मीराँ बाबरी, सासु कह्याँ कुलनासाँ री

बिख रो प्यालो राणा भेज्याँ, पीवाँ मीराँ हाँसाँ री।

तण मण बार्‌याँ परि चरिणामाँ दरसण अमरित प्यास्याँ री।

मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, थ्यारी धारी सरणाँ आस्याँ री।।

अथवा

सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने सयानी हैं जानकी जानी भली।

तिरछे करि नैन, दै सैन, तिन्हैं समुझाइ कछू, मुसुकाइ चली।

तुलसी तेहि औसर सबै अवलोकति लोचनलाहु अली।

अनुराग-तड़ाग में भानु उदैं बिगसीं मनो मंजुल कंजकलीं।।

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं दो का रचना-कौशल विश्लेषित कीजिये : 2×6=12

(क) जहाँ-जहाँ पद-जुग धरई। तहिं-तहिं सरोरूह झरई

जहाँ-जहाँ झलकए अंग। तहिं-तहिं बिजुरि-तरंग।।

कि हेरलि अपरुब गोरि। पइठलि हिअ—मधि मोरि

जहाँ-जहाँ नयन-विकास। ततहिं कमल-प्रकास।।

(भाषा सौंदर्य)

अथवा

महाई म्हाँ गोविन्द गुण गाणा।।

राजा रूठ्याँ नगरी त्यागाँ, हरि रूठ्याँ कठ जाणा।

राणो भेज्या विख रो प्यालो, चरणामृत पी जाणा।

काला नाग पिटारयाँ भेज्या, सालगराम पिछाणा।

मीरा गिरधर प्रेम दिवाँणी, साँवल्या वर पाणा।

(स्त्री वेदना)

(ख) ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।

हंस सुता की सुंदर कगरी, अरु कुंजनि की छांही।।

वै सुरभी वै बच्छ दोहनी, खरिक दुहावन जाहीं।

ग्वाल-बाल मिलि करत कुलाहल, नाचत गहि गहि बाहीं।।

(प्रकृति चित्रण)

अथवा

सिथिल स्नेह कहैं कौसिला सुमित्राजू सों,

मैं न लखी सौति, सखी! भंगिनी ज्यों सेई है

कहै मोहि भैया, कहौं—मैं न मैया, भरत की

बलैया लेहौं भैया, तेरी मैया कैकेई है।।

(पारिवारिक प्रेम)